समावेशन की कुंजी
कक्षा-कक्ष प्रक्रियाएँ

केवलानन्द काण्डपाल*

वर्तमान समय में समावेशी कक्षा-कक्ष प्रक्रियाएँ, ज्ञान सृजन, सतत एवं व्यापक मूल्यांकन आदि ऐसे शैक्षणिक सरोकार हैं, जिनके परिप्रेक्ष्य में अध्यापकों से अपेक्षा की जाती है कि वह अपनी शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में इनको समाहित करें। शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में सबसे महत्वपूर्ण है कि प्रत्येक बच्चे को अपनी गति एवं सीखने के अपने तरीके के अनुसार भागीदारी के अवसर मिलें। प्रत्येक बच्चे की सीखने की ज़रूरतों के प्रति हम सचेत रहें, उसकी प्रगति का आकलन करते रहें। इसके लिए हमें बहुत बार पीछे लौटकर नए सिरे से शुरुआत करने की भी ज़रूरत होती है। यह प्रयास तब तक जारी रखने होंगे, जब तक कि प्रत्येक बच्चा सीखे हुए से अपने लिए अर्थ निर्मित करने में सक्षम न हो जाए। इस लेख में कक्षा-कक्ष के वास्तविक अनुभवों के आलोक में उपयुक्त शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को जानने एवं समझाने का प्रयास किया गया है।

डाइट संकाय सदस्य के रूप में विद्यालयों के अनुश्रवण के दौरान अध्यापकों एवं बच्चों से अंतर्क्रिया के बहुत अवसर मिलते रहते हैं। इस दौरान बहुत बार ऐसा कुछ घटित होता है कि बच्चों के सीखने-सिखाने के बारे में नवीन अंतर्दृष्टि होती है। इसी परिप्रेक्ष्य में, जनपद के एक राजकीय प्राथमिक विद्यालय के अनुश्रवण का अनुभव इस लेख के माध्यम से साझा किया गया है। ज़िला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, बागेश्वर से 8 कि.मी. दूरी पर राजकीय प्राथमिक विद्यालय बहुली स्थित है। यह विद्यालय मॉडल विद्यालय के रूप में चिह्नित है और इसके अनुरूप अध्यापकों की नियुक्ति प्रक्रिया संपन्न की जा चुकी है एवं आवश्यक साज-सज्जा एवं अन्य व्यवस्था करने की प्रक्रिया गतिमान है। एक तरह से यह मॉडल विद्यालय के रूप में विकसित हो रहा है। इस विद्यालय के अनुश्रवण में मेरे दो मंतव्य थे। प्रथम, विद्यालय में इंटर्न के रूप में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे दो द्विवर्षीय डी. एल. एड. विद्यार्थी-शिक्षकों के साथ विचार-विमर्श एवं उनकी अकादमिक समस्याओं का समाधान खोजने का प्रयास। वस्तुतः डाइट के अकादमिक संकाय सदस्यों से यह अपेक्षा की गई है कि वे विद्यार्थी-शिक्षकों के मेंटर के रूप में भी कार्य करेंगे। दूसरा, विद्यालय के बच्चों से बातचीत के अवसर। यह विद्यालय विगत 5–6 माह से मॉडल विद्यालय के रूप में कार्य कर रहा है, विद्यालय में विषयवार अध्यापकों की नियुक्तियाँ की

* *प्राचार्य*, राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, पुड्कुनी (कपकोट), जनपद-बागेश्वर, उत्तराखण्ड –263642

गई हैं। अतः मेरी जिज्ञासा स्वाभाविक थी कि बच्चों के सीखने के स्तर में प्रगति की दिशा क्या है?

विद्यालय में कुल 60 विद्यार्थी नामांकित हैं (अनुश्रवण तिथि को 56 बच्चे उपस्थित थे, जिसमें से कक्षा 5 में 12 बच्चे उपस्थित थे।), जनपद के सरकारी विद्यालयों में घटते विद्यार्थी नामांकन के सापेक्ष यह संख्या उत्साहित करती है। राज्यपाल पुरस्कार से सम्मानित प्रधानाध्यापिका किरण पंत ने बताया कि मॉडल विद्यालय बनने से इस वर्ष विद्यार्थी नामांकन बढ़ा है। बाद में समुदाय के कुछ लोगों से बातचीत में यह बात प्रमुखता से उभरकर सामने आई कि अब प्रत्येक कक्षा के लिए कम-से-कम एक अध्यापक तो उपलब्ध है। समुदाय की यह चेतना नीति-निर्धारकों के लिए गंभीर चिंतन का प्रश्न है।

विद्यार्थी-शिक्षक द्वय विनोद सिंह और विनोद सिंह परिहार जी से क्रियात्मक शोध, 5E टीचिंग प्लान, सामुदायिक संपर्क, रिफ़लैक्टिव डायरी, सतत एवं व्यापक मूल्यांकन, कंसेप्ट मैपिंग आदि के शैक्षणिक एवं क्रियात्मक पहलुओं पर विचार-विमर्श हुआ। समावेशी कक्षा एवं सतत मूल्यांकन को कक्षा-कक्ष में कैसे समन्वित किया जाए? विद्यार्थी-शिक्षकों की जिज्ञासा का केंद्रीय बिंदु प्रतीत हुआ। मुझे तो जैसे मुँह-माँगी मुराद ही मिल गई। यद्यपि कोई पूर्व तैयारी तो थी नहीं, फिर भी समावेशी कक्षा एवं सतत मूल्यांकन को समेटे हुए कक्षा संचालन करने के दृष्टिगत विषय-वस्तु की तुलना में प्रक्रिया अधिक महत्वपूर्ण है। मुझे पूरा भरोसा था कि बच्चों से बातचीत के साथ-साथ ही पाठ्य विषय-वस्तु का निर्धारण होता जाएगा। महत्वपूर्ण यह है कि कक्षा में प्रत्येक बच्चे की शैक्षणिक ज़रूरतों को संबोधित करते हुए समावेशी माहौल बनाया जाए और सीखने-सिखाने के क्रम में प्रत्येक बच्चे की प्रगति का अंदाज़ा भी होता रहे। विद्यालय की कक्षा 5 के विषयाध्यापक से अनुमति लेकर दोनों विद्यार्थी-शिक्षकों के साथ कक्षा 5 में प्रवेश किया। कक्षा 5 में 13 में से 12 बच्चे उपस्थित थे। गणित विषय का कालांश था, तो इसी विषय को लेकर आगे बढ़ने का निश्चय किया। बच्चों से शुरुआती परिचय के बाद मालूम हुआ कि पिछले दिनों 'भिन्न' संकल्पना पर काम किया गया है। बच्चों ने बताया कि भिन्न के प्रश्नों (भिन्नों को जोड़ना, घटाना आदि) हल करना बच्चों को आता है। बच्चों ने ऐसे प्रश्नों को हल कर लिया है। यह उपयुक्त अवसर था कि भिन्न के बारे में बच्चों की समझ का आकलन कर लिया जाए।

इसके लिए मैंने (लेखक द्वारा) श्यामपट्ट पर 'भिन्न' शब्द लिख दिया और बच्चों से कहा इस शब्द को लेकर जो भी विचार उनके मन में आता है, निस्संकोच बताएँ और मैं आपके विचारों को श्यामपट्ट पर लिखूँगा। इसमें मेरा मन्तव्य यह था कि भिन्न के बारे में बच्चों की अवधारणात्मक समझ का कुछ-कुछ अंदाज़ा लगा सकूँ। श्यामपट्ट पर 'भिन्न' शब्द लिखने के बाद कक्षा में बच्चों के जो विचार सामने आए, उनमें से कुछ प्रमुख निम्न प्रकार हैं—

1. एक बच्चे का कहना था कि भिन्न का अर्थ है, दूसरे से अलग होना। (यहाँ पर बच्चा भिन्न शब्द को भाषाई संदर्भों में अभिव्यक्त कर रहा था, स्पष्टतया बच्चा भिन्न की गणितीय अवधारणा को अभिव्यक्त नहीं कर रहा है।)
2. एक दूसरी बच्ची ने बताया कि भिन्न एक संख्या है। (बच्ची का उत्तर तो गणितीय परिप्रेक्ष्य में ही था,

परंतु इससे यह पुख्ता रूप से नहीं कहा जा सकता कि बच्ची भिन्न की अवधारणा को समझ गई है।)

3. एक तीसरी बच्ची ने कहा कि भिन्न का मतलब है कितने में से कितना। (इस बच्ची का विचार भिन्न की समझ को मोटे तौर पर अभिव्यक्त तो कर रहा था, परंतु इसमें और अधिक स्पष्टता की ज़रूरत है। भिन्न कितने में से कितना के साथ-साथ, कितने बराबर हिस्सों में से कितना भी है।)
4. एक बच्चे ने बताया कि जब हमें कोई चीज़ बाँटनी होती है तो हम उसे भिन्न में लिखते हैं। (बच्चा भिन्न की कब ज़रूरत पड़ती है, यह तो बता रहा है, परंतु इससे भिन्न की अवधारणा को समझ गया है, नहीं कहा जा सकता है।)
5. एक अन्य बच्ची का कहना था कि जब हम किसी वस्तु में से कुछ हिस्सा किसी को दे देते हैं तो वहाँ पर भिन्न की ज़रूरत होती है। (यह बच्ची गणित विषय में भिन्न संक्रिया की ज़रूरत कहाँ-कहाँ पड़ती है? यह बताना चाह रही है, परंतु जिस तरह से वह बता रही है, वह घटाने की गणितीय संक्रिया के बारे में बच्ची की अवधारणा को व्यक्त कर रही है।)
6. इसी कक्षा के एक अन्य बच्चे ने बताया कि भिन्न एक संख्या है, जिसमें अंश एवं हर होता है। (यह बच्चा भिन्न की अवधारणा के बजाए इसके स्वरूप को ही बता रहा था, भिन्न में अंश एवं हर कौन-सा अंक है, बच्चा यह बता नहीं पाया। बच्चा एक तरह से भिन्न के बारे में कक्षा में कही-सुनी बात को दोहरा रहा था, उसकी स्मृति तो अच्छी थी, परंतु भिन्न की अवधारणा को वह ठीक ढंग से समझ नहीं पाया है, ऐसा अनुमान किया जा सकता है।)
7. एक बच्ची, जिसका नाम जेसिका परिहार था, (मैं, इस बच्ची का नामोल्लेख ज़रूर करना चाहूँगा।) ने भिन्न के बारे में कोई बात तो नहीं बताई, परंतु दो जिज्ञासाएँ रखीं।

पहला— भिन्न किस प्रकार से बनती होंगी?

दूसरा— गणित विषय में भिन्न के प्रश्न हल करने की ज़रूरत क्यों पड़ती है?

कक्षा में आगे क्या किया जाना है? जेसिका की जिज्ञासा ने इसकी राह दिखा दी थी। बच्चों की प्रतिक्रिया से यह स्पष्ट हो रहा था कि भिन्न की अवधारणात्मक समझ हेतु कुछ किए जाने की आवश्यकता है।

इससे पहले इस प्रश्न को संबोधित किया जाना ज़रूरी था कि आखिर भिन्न की ज़रूरत ही क्यों पड़तीहै?

बच्चों के साथ चर्चा के लिए कुछ गणनात्मक स्थितियाँ रखीं।

1. यदि ₹100 को 5 व्यक्तियों में बराबर-बराबर बाँटना हो तो इसके लिए हमें कौन-सी गणितीय क्रिया करनी होगी?
2. यदि ₹100 में से ₹ 20 किसी व्यक्ति को दिए जाने हों तो इसे किस प्रकार से अभिव्यक्त करेंगे?
3. यदि ₹100 को 5 बराबर हिस्से में बाँटकर दो हिस्से किसी व्यक्ति को देने हों तो इसके लिए कौन-कौन-सी गणितीय क्रियाएँ करनी होंगी? इसे किस प्रकार से प्रदर्शित करेंगे?

बच्चों ने पहली दो स्थितियों के बारे में बताया कि पहली स्थिति में तो हमें 100 में 5 का भाग

देना होगा, जिससे पाँचों व्यक्तियों को बराबर-बराबर बँट जाए। दूसरी स्थिति में कुछ बच्चों ने कहा कि ₹100 में से ₹20 घटा देंगे। एक बच्ची ने बताया कि इसे 20/100 के रूप में अभिव्यक्त करेंगे, इस बच्ची का नाम जेसिका परिहार है। संभवतया यह बच्ची भिन्न संबंधी गणन क्रिया को भली-भाँति समझती थी, परंतु उसकी जिज्ञासा को संबोधित करना ज़रूरी था कि भिन्न किस प्रकार से बनती होगी।

इसके लिए तात्कालिक तौर पर एक गतिविधि सूझी। बच्चों से कहा कि हम हमारे पास जो भी वस्तु उपलब्ध हो, उसके बराबर हिस्से करने का प्रयास करें। हम अपनी इच्छानुसार 4, 5, 6 या जितना हम ठीक समझें, हिस्से करने का प्रयास करेंगे। कुछ पलों की खामोशी के बाद बच्चों ने जो कुछ भी उनको मिला, उसको ही बराबर-बराबर भागों में बाँटने की कोशिश करनी शुरू कर दी। बच्चियाँ स्केल (पैमाना), डोरी, कापी का पन्ना, रुपये, पैसे, पेंसिल जो भी उन्हें ठीक लगा, उसको बराबर हिस्सों में बाँटने की जुगत में लग गईं। आपस में कुछ देर बातचीत के बाद उन्होंने एक रास्ता निकाला कि पहले उस वस्तु की संपूर्ण मात्रा की जानकारी हमें होनी चाहिए जिसको बराबर भागों में बाँटा जाना है। जैसे कुल कितने रुपये हैं?, पेंसिल कितनी लम्बी है?, डोरी कितनी लंबी है?, पेपर कितना लम्बा-चौड़ा है? यह मालूम होने के बाद हमें जितने हिस्से में बाँटना है, उससे विभाजन (भाग देकर) करके हम बराबर हिस्से कर सकते हैं। सभी बच्चों ने अपने-अपने तरीके से बराबर हिस्से करने का प्रयास किया। मसलन एक बच्ची जो स्केल को 10 बराबर भागों में बाँटने का कार्य कर रही थी, ने स्केल की माप 30 सेमी. को 10 से भाग देकर 3—3 सेमी. के हिस्से में क्रमश: 3, 6, 9, ...30 पर स्केच पेन से अंकित कर लिया। इसी प्रकार अन्य बच्चों ने अपनी-अपनी ज़रूरत के अनुसार हिस्से करके प्रक्रिया पूर्ण कर ली।

इसी दौरान मैंने बच्चों की आपस में चल रही बात पर ध्यान केंद्रित किया। एक बच्ची, जिसने एक पेपर के 4 बराबर हिस्से कर लिए थे, ने कहा कि जब हमें कोई वस्तु के बराबर हिस्से में से कुछ हिस्से अलग करने हों तो इससे भिन्न की रचना होगी। मैंने उससे इसे स्पष्टता के साथ बताने को कहा तो उसने बताया कि मेरे पास पेपर के 4 बराबर हिस्सों में से अगर 1 हिस्सा मैं आपको दे दूँ तो यह 4 में से 1 हिस्सा हुआ। मुझे महसूस हुआ कि बच्चे भिन्न की अवधारणा समझने की सही दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। ज़रूर कुछ बच्चे असमंजस में दिखाई पड़े। सो, उनके साथ बैठकर उनकी चयनित वस्तु को इच्छित हिस्सों में बाँटने की प्रक्रिया पूरी की। इसके बाद उसमें से कुछ हिस्से अलग करके इसे भिन्न के रूप में लिख लिया। इस प्रक्रिया के बाद बच्चों ने कुछ-कुछ सूत्र पकड़ते हुए कहा कि जब हमें किसी वस्तु के बराबर हिस्से में से कुछ हिस्से अलग करने हों तो इस गणना को अभिव्यक्त करने के लिए भिन्न की ज़रूरत होती है। एक अन्य बच्ची, जो इस प्रक्रिया में कठिनाई महसूस कर रही थी, का कहना था कि यह तो सीधे-सीधे घटाने का मामला है। मैंने जेसिका परिहार को इस बच्ची के साथ बात करने के लिए कहा, मेरे अनुमान से जेसिका परिहार भिन्न की अवधारणा को भली-भाँति समझने की दिशा में थी। इसका फ़ायदा मिला, जेसिका के साथ उस बच्ची के बीच बहस चल पड़ी। उपयुक्त समय पर मैंने हस्तक्षेप करके बात

का निष्कर्ष तक पहुँचने में मदद की। जब सभी बच्चों ने अपने-अपने टास्क को पूरा कर लिया तो सभी बच्चों से अपनी-अपनी बात रखने को कहा, इसमें बच्चों को यह बताना था कि उन्होंने अपनी-अपनी वस्तुओं को किस प्रकार बराबर हिस्सों में विभाजित किया? इसमें से कुछ हिस्सों को अलग करना हो तो किस प्रकार करेंगे? इसे आंकिक रूप से किस प्रकार लिखेंगे?

बच्चों के प्रस्तुतीकरण के बाद कक्षा में चर्चा हुई, इस चर्चा से कक्षा निम्न निष्कर्ष पर पहुँची—

1. यदि किसी वस्तु में से किसी को कुछ भाग दिया जाता है, कितना शेष बच गया? यह जानने के लिए घटाने की गणितीय प्रक्रिया अपनानी होगी।
2. यदि किसी वस्तु में से किसी को कुछ भाग दिया जाता है और यह मालूम करना हो कि उसे संपूर्ण वस्तु का कितना हिस्सा दिया गया? जैसे— ₹100 में से किसी व्यक्ति को ₹ 20 दिए जाएँ तो इसे हम ₹ 100 में से ₹20 कह सकते हैं या भिन्न रूप में ₹20/ ₹100 भी लिख सकते हैं। इसके लिए भिन्न की ज़रूरत तभी होगी, जब हमें यह बताने की आवश्यकता हो कि संपूर्ण वस्तु का कितना भाग दिया गया?
3. यदि कोई चीज़/वस्तु एक से अधिक व्यक्तियों के बीच में बराबर बाँटना हो तो इसके लिए हमें बराबर बाँटने के लिए उतने बराबर हिस्से करने होंगे, जितने व्यक्तियों में इसका बँटवारा होना है। इसके लिए भाग देने की गणितीय संक्रिया से काम चल जाएगा, एक व्यक्ति को कितना हिस्सा मिलेगा, इसको संपूर्ण वस्तु के सापेक्ष अभिव्यक्त करने के लिए भिन्न में लिखने की ज़रूरत होगी। यथा—₹100 को 5 व्यक्तियों में बराबर बाँटने पर प्रत्येक को ₹20 मिलेंगे और प्रत्येक व्यक्ति को ₹100 का 20/100 या 1/5 हिस्सा मिलेगा।
4. यदि किसी वस्तु को एक से अधिक व्यक्तियों में असमान रूप से बाँटने की ज़रूरत है, तो ऐसी स्थिति में भिन्न की संक्रिया हमारे लिए उपयोगी होगी। यथा— ₹100 में से 2 हिस्से राम को देना है तथा 3 हिस्सा श्याम को देना है तो पहले ₹100 को 5 बराबर हिस्सों में बाँटने की ज़रूरत होगी। इन 5 बराबर हिस्सों में से दो हिस्से राम को मिलेंगे तथा 3 हिस्से श्याम को मिलेंगे। अतः ₹100 को 5 बराबर हिस्से में बाँटने पर ₹20 आएँगे। ₹20 के 2 हिस्से अर्थात् ₹40 राम को मिलेंगे तथा ₹20 के 3 हिस्से अर्थात् ₹60 श्याम को मिलेंगे। दोनों हिस्सों का योग संपूर्ण के बराबर अर्थात् ₹100 होगा।

इस प्रकार इस छोटी अवधि की कक्षा में संलग्नता (इंगेज), खोजना (एक्सप्लोर), व्याख्या (एक्सप्लैन), विस्तार (इलैबरअट्), मूल्यांकन (इवैल्युएट्) को ध्यान में रखकर कक्षा प्रक्रिया अपनाई गई। इस दौरान बच्चों की प्रगति का निरंतर अवलोकन किया गया तथा ज़रूरत पड़ने पर मदद लेने एवं देने के अवसर निकाले गए। अब वक्त था कि यह मालूम किया जाए कि बच्चों ने भिन्न की अवधारणा को समझा है या नहीं। कक्षा प्रक्रिया को इसी मंतव्य से संचालित किया गया था। इससे यह मालूम करने में मदद मिल सकती थी कि यदि किसी बच्चे को इसमें कठिनाई है तो आगे उस बच्चे के साथ किस प्रकार से काम किया जाए कि वह भिन्न की अवधारणा को

भली-भाँति समझ सके। इसके लिए बच्चों से ऐसे प्रश्न निर्मित करने को कहा गया जिनका उत्तर हमें भिन्न में प्राप्त हो या हमें इसके लिए भिन्न बनाने की ज़रूरत हो। बच्चों ने जो प्रश्न बनाए, उनमें से कुछ प्रश्नों की बानगी निम्न प्रकार से है—

1. राम के पास ₹100 हैं, इसमें से उसने ₹ 20 अपनी बहन को दे दिए। अब उसके पास कितने रुपये बचे। (स्पष्ट है कि यह बच्चा अभी भिन्न की अवधारणा को नहीं समझ पाया है। अतः बच्चे के साथ इस बारे में पुनः नए सिरे से काम करने की ज़रूरत है।)
2. मोहन के पास 10 टॉफ़ियाँ थीं, इसमें से उसने 2 टॉफियाँ अपने दोस्त को दे दीं। इसे भिन्न में लिखो। (प्रतीत होता है कि यह बच्ची भिन्न में अभिव्यक्त करना तो जान गई है, भिन्न की संक्रिया को कहाँ पर प्रयुक्त किया जाना है और भिन्न किस प्रकार से गणितीय संक्रिया में विकसित होती है, इस बारे में बच्ची के साथ कुछ और काम करने की ज़रूरत है।)
3. जेसिका परिहार (इस बच्ची के बारे में मेरा अनुमान है कि वह भिन्न की अवधारणा को समझ रही है, यह उसके द्वारा निर्मित प्रश्न से भी महसूस हो रहा है।) के द्वारा बनाया गया प्रश्न था, महेश ने अपने बर्थ डे में केक के 10 बराबर टुकड़ों में से 4 टुकड़े अपनी बहन को दे दिए। महेश ने केक का कितना हिस्सा अपनी बहन को दिया?

इस मूल्यांकन से आगामी दिनों में भिन्न की अवधारणा के बारे में काम करने के लिए कुछ ठोस संकेत प्राप्त होते हैं। जेसिका परिहार के बारे में अनुमान किया जा सकता है कि संभवतया वह इसे समझ रही है। इस बारे में ठोस रूप से निर्णय लेने से पूर्व उसे और अवसर देना उपयोगी हो सकता है। जेसिका से इस बारे में बात करने पर उसने बताया कि गाँव में भाईयों के बीच बँटवारा होने पर बँटवारा किस प्रकार किया जाता है? इसका वह पता लगाएगी। (यहाँ पर उल्लेखनीय है कि जिस ग्रामीण परिवेश से बच्ची आती है, वहाँ पर भाईयों के बीच बँटवारे के दिन उपलब्ध अनाज, बर्तन, पशुधन एवं खेतों का बँटवारा किया जाता है। यद्यपि इसमें अनुमान का सहारा ही अधिक लिया जाता है और गणना के लिए भिन्न की गणितीय संक्रिया को अपनाया नहीं जाता।) संभवतया जेसिका के मन में था कि बँटवारे में दो भाईयों को कितना-कितना हिस्सा मिलना चाहिए? इसकी गणितीय संक्रिया में भिन्न की अवधारणा का उपयोग करना सोच रही हो। यह ज़रूरी नहीं है कि वह एकदम ठीक-ठीक हिसाब-किताब निकाल ले। इस बँटवारे में बहुत-सी चीज़ें तो बराबर बँट भी नहीं सकतीं। एक भैंस को दो भाईयों में किस प्रकार से बाँटा जाए, जैसे कतिपय व्यावहारिक पक्ष हो सकते हैं, परंतु इतना निश्चित है कि यह बच्ची भिन्न की अवधारणा को समझने की दिशा में आगे बढ़ रही है। आगामी कक्षाओं/समय में ज़रूरत के अनुसार आवश्यकतानुसार जोड़-घटाव करती जाएगी।

इस प्रकार, समावेशी कक्षा-कक्ष प्रक्रिया में सबसे महत्वपूर्ण है कि प्रत्येक बच्चे को अपनी गति एवं सीखने के अपने तरीके के अनुसार भागीदारी के अवसर मिलें, प्रत्येक बच्चे की सीखने की ज़रूरतों के प्रति हम सचेत रहें, उसकी प्रगति का आकलन करते रहें। इसके लिए हमें बहुत बार पीछे लौटकर बार-बार नए सिरे से शुरुआत करने की भी ज़रूरत

होगी। यह प्रयास तब तक जारी रखने होंगे, जब तक कि प्रत्येक बच्चा सीखे हुए से अपने लिए अर्थ निर्मित करने में सक्षम न हो जाए। बच्चों द्वारा ज्ञान की संरचना को व्यावहारिक रूप देने के लिए यह तो करना ही होगा तथा सतत रूप से करना होगा।

इस प्रकार से हम कह सकते हैं कि समावेशी कक्षा में प्रत्येक विद्यार्थी की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए कक्षा-कक्ष प्रक्रियाओं को इस प्रकार से आगे बढ़ाना होता है कि प्रत्येक विद्यार्थी अपनी गति से, अपने सीखने के तरीके से आगे बढ़ सके। इसी तरह कक्षा-कक्ष प्रक्रिया के दौरान अवलोकन एवं आकलन के माध्यम से बच्चे की प्रगति का अनुमान लगाते हुए आवश्यकतानुसार आगे बढ़ने एवं वापस लौटने की प्रक्रिया सतत मूल्यांकन का वातावरण रचती है। ये दोनों ही प्रक्रियाएँ समावेशी कक्षा-प्रक्रिया के अपरिहार्य अंग हैं। सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में ये सभी बातें साथ-साथ चलती रहती हैं। समावेशी कक्षा-कक्ष प्रक्रिया में किसी एक विद्यार्थी की तुलना दूसरे से नहीं हो सकती। इस प्रक्रिया में प्रत्येक बच्चा सीखने की एक स्वायत्त इकाई के रूप में भागीदार होता है और अपने लिए अर्थ निर्मित करते हुए जानता, सीखता एवं समझता है तथा इसके लिए सतत रूप से अपनाई जाने वाली प्रक्रियाएँ समावेशी कक्षा का सृजन करती हैं।

इस संक्षिप्त-सी कक्षा-कक्ष प्रक्रिया के दौरान दोनों विद्यार्थी-शिक्षक कक्षा-कक्ष में मौजूद रहे। इसके अवलोकन से उनको अपनी कक्षा-कक्ष प्रक्रियाएँ संचालित करने एवं इस प्रक्रिया को समावेशी बनाने में यत्किंचित मदद मिल सके, यह मेरा मकसद था। दोनों विद्यार्थी-शिक्षकों ने कक्षा के बाद में अपनी कुछ जिज्ञासाएँ रखीं, अपने अनुभव के आधार पर मैंने समाधान का प्रयास भी किया। बाद में उनके द्वारा विश्वास दिलाया गया कि वे अपनी कक्षाओं को समावेशी बनाने का प्रयास करेंगे। उनकी यह प्रतिबद्धता, मेरे लिए संतोष की बात है।